Barnebøker for Norge

barneboker.no

वह दिन जब मैंने शहर के लिए घर छोड़ा / Den dagen jeg dro hjemmefra for å dra til byen

Skrevet av: Lesley Koyi, Ursula Nafula
Illustret av: Brian Wambi
Oversatt av: Nandani (hi), Espen Stranger-Johannessen (nb)

Denne fortellingen kommer fra African Storybook (africanstorybook.org) og er videreformidlet av Barnebøker for Norge (barneboker.no), som tilbyr barnebøker på mange språk som snakkes i Norge.

Dette verket er lisensiert under en Creative Commons
Navngivelse 4.0 Internasjonal Lisens.
https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/deed.no

वह दिन जब मैंने शहर के लिए घर छोड़ा

Den dagen jeg dro hjemmefra for å dra til byen

✎ Lesley Koyi, Ursula Nafula
Brian Wambi
Nandani
hindi / bokmål
nivå 3

(uten bilder)

मेरे गाँव का छोटा सा बस स्टैंड लोगों और भीड़-भाड़ वाली बसों से भरा रहता है। वह मैदान बहुत सारी चीजों से और भरा रहता है। कंडक्टर उस जगह का नाम चिल्लाते रहते हैं जहाँ बस जा रही होती है।

• • •

Den lille busstasjonen i landsbyen min var travel og stappfull av busser. På bakken var det flere ting som skulle lastes. Medhjelpere ropte navnene på stedene dit bussene gikk.

“शहर!शहर!पश्चिम जा रहे है!” मैंने कंडक्टर को चिलाते सुना। ये वही बस थी जिसे मुझे पकड़ना था।

. . .

“Byen! Byen! Vestover!” hørte jeg en medhjelper rope. Det var bussen jeg måtte ta.

शहर जाने वाली बस लगभग भर चुकी थी, लेकिन और लोग इसमें जाने के लिए धक्के दे रहे थे। कुछ लोगों ने अपने समान बस के अंदर रखे थे। और लोगों ने उसे अंदर बने ताखों पर रखा था।

• • •

Bussen til byen var nesten full, men flere folk dyttet for å komme om bord. Noen plasserte bagasjen sin i bagasjerommet under bussen. Andre la den på hyllene inne i bussen.

वापस जाने वाली बस जल्द ही भर गई। जल्द ही पूर्व की ओर चल दी। सबसे जरूरी मेरे लिए अभी था अपने चाचा के घर को ढूंढना।

• • •

Bussen som skulle tilbake ble fylt opp fort. Det viktigste for meg nå var å begynne å lete etter huset til onkelen min.

नौ घंटे बाद, मैं जगा, जोर के पीटने और यात्रियों को बुलाने की आवाज़ से जो मेरे गाँव वापस जा रहे थे। मैंने अपना छोटा सा थैला उठाया और बस से बाहर कूद गया।

. . .

Ni timer senere våknet jeg av høylytt banking og roping etter passasjerer som skulle tilbake til landsbyen min. Jeg grep fatt i den lille veska mi og hoppet ut av bussen.

नये यात्री अपना टिकट हांथों में दबाये, भीड़ वाली बस में बैठने के लिए जगह देख रहे थे। औरते जो छोटे बच्चों के साथ थीं वे उन्हें इस लंबी यात्रा के लिए सुविधापूर्ण बना रही थीं।

. . .

Nye passasjerer klamret seg til billettene sine mens de så etter et sted å sitte siden det var trangt om plassen. Kvinner med unge barn la til rette for dem så de skulle få det behagelig under den lange reisen.

मैं एक खिड़की के बगल में घुस गया। मेरे बगल में बैठे हुए आदमी ने हरे रंग का प्लास्टिक बैग जोर से पकड़ रखा था। उसने पुरानी चप्पल, घिसा हुआ कोट पहना था और वह घबराया हुआ लग रहा था।

. . .

Jeg presset meg inn ved siden av et vindu. Personen som satt ved siden av meg holdt hardt om en grønn plastpose. Han hadde på seg gamle sandaler, en utslitt frakk, og han så nervøs ut.

रास्ते में, मैं उस जगह का नाम याद कर रहा था जहाँ मेरे चाचा उस बड़े शहर में रहते है। मैं नींद में भी वो नाम बड़बड़ा रहा था।

. . .

På veien lærte jeg meg utenat navnet på stedet i den store byen der onkelen min bodde. Jeg mumlet fortsatt da jeg falt i søvn.

लेकिन मेरा मन घर को चला गया। क्या मेरी माँ ठीक हिगी? क्या मेरे खरगोश को कुछ पैसे मिलेंगे? क्या मेरे भाई को उन पेड़ो में पानी डालना याद रहेगा जो मैंने लगाये हैं?

. . .

Men tankene mine vandret hjem. Kommer moren min til å bli trygg? Kommer kaninene mine til å innbringe noen penger? Kommer broren min til å huske å vanne de nyutsprungne trærne mine?

बस से बाहर देखते हुये मैंने ये महसूस किया कि मैं अपने गाँव को छोड़ रहा हूं, उस जगह को जहाँ मैं बड़ा हुआ हूँ। मैं एक बड़े शहर में जा रहा था।

. . .

Jeg så ut av bussen og innså at jeg var i ferd med å forlate landsbyen min, stedet hvor jeg hadde vokst opp. Jeg skulle dra til den store byen.

लोगो के चढ़ने का काम खत्म हुआ और सभी यात्री बैठ गए। फेरीवाले अभी भी बस में घुस रहे थे अपने समान को यात्रियों को बेचने के लिये। सभी उन चीजों का नाम चिल्ला रहे थे जो उन्हें बेचनी थी। वे शब्द मुझे मजेदार लग रहे थे।

. . .

Lastingen av bagasjen var ferdig og alle passasjerene hadde satt seg. Gateselgere presset seg fortsatt inn i bussen for å selge varene sine til passasjerene. Alle ropte navnene på det de hadde til salgs. Jeg syntes ordene hørtes merkelige ut.

जब यात्रा आगे बढ़ी, बस अंदर से काफी गर्म हो गयी। मैंने अपनी आँखों को बंद कर लिया सोने की आशा में।

. . .

Etter hvert som reisen fortsatte ble det veldig varmt i bussen. Jeg lukket øynene og håpet å få sove.

जब बस ने स्टैंड को छोड़ा, मैंने खिड़की से बाहर देखना शुरू किया। मैं सोचने लगा कि क्या कभी मैं अपने गाँव वापस जाऊँगा।

. . .

Idet bussen forlot busstasjonen, stirret jeg ut av vinduet. Jeg lurte på om jeg noensinne skulle komme tilbake til landsbyen min igjen.

कुछ यात्रियों ने पीने का समान लिया और लोग छोटा मोटा नास्ता ले आए और उसे चबाना शुरू कर दिया। वे जिनके पास पैसे नहीं थे, जैसे कि मैं, ये सब बस देख रहे थे।

. . .

Noen få passasjerer kjøpte noe å drikke, andre kjøpte små snacks som de begynte å tygge på. De som ikke hadde noen penger, som jeg, bare så på.

ये सभी गतिविधियां बस के आवाज़ से बाधित हुई, यह एक संकेत था कि हम जाने के लिये तैयार है। कंडक्टर फेरीवालो पर चिल्लाया कि वे बस से बाहर जाए।

• • •

Disse aktivitetene ble avbrutt av tutingen til bussen, et tegn på at vi var klare til å dra. En medhjelper ropte at gateselgerne måtte komme seg ut.

फेरीवाले एक दूसरे को धक्का दे रहे थे ताकि वे बस से बाहर जा सके। कुछ यात्रियों को खुल्ले पैसे वापस लौटा रहे थे। दूसरे अंतिम समय में और समान बेचने की कोशिश में लगे रहे।

• • •

Gateselgere dyttet hverandre for å komme seg ut av bussen. Noen ga tilbake vekslepenger til de reisende. Andre forsøkte i siste liten å selge noen flere varer.